62

मसीह के साथ राज करना!

(20: 4-6)

हम बाइबल की सबसे विवादास्पद पुस्तक के सबसे विवादास्पद अध्याय के सबसे विवादास्पद भाग अर्थात प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 की 4 से 6 आयतों में आ गए हैं। 20:1-3 में हमने देखा था कि शैतान को एक हज़ार वर्ष के लिए बांधा गया था। अब हम पढ़ते हैं:

> फिर मैंने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूरत की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे। और जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे; यह तो पहिला मृतकोत्थान है। धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरुत्थान का भागी है; ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके हाथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे (आयतें 4-6)।

एक पल के लिए 1 से 6 आयतों के बारे में जो कुछ आपने सुना या पढ़ा है, उसके अनुमान को भूल जाएं और पवित्र आत्मा द्वारा की गई तुलना पर ध्यान दें: *शैतान को* हज़ार वर्ष के लिए *बांधा गया,* जबकि *शहीदों ने* हज़ार वर्ष तक *राज* किया। पिछले पाठ में हमने देखा था कि एक हज़ार वर्ष पूर्ण सम्पूर्णता का संकेत हैं:[1] शैतान को पूरी तरह बांधा गया था जबकि शहीदों ने पूरी तरह राज किया। अन्य शब्दों में, एक ओर तो *पूर्ण पराजय* थी जबकि दूसरी ओर *पूर्ण विजय*!

आरम्भिक मसीही लोगों के लिए इसे ध्यान में रखना आवश्यक था। एक सांसारिक दृष्टिकोण से ऐसा लगता था कि शैतान जीत रहा है और मसीहियत खत्म हो गई है। प्रकाशितवाक्य 20:1-6 ने विश्वासी मसीहियों को पुकार कर कहा "यह केवल भ्रम है! वास्तविकता यह है कि तुम जीत रहे हो! अपने प्राण खोने की चिन्ता न करो, क्योंकि अपने

विश्वास के लिए शहीद होने वाले वास्तव में मरे नहीं हैं। वे *जीवित* हैं और यीशु के साथ *राज कर रहे* हैं!''

प्रकाशितवाक्य 20:4-6 से ऐसी कितनी ही अजीब और उलझन भरी शिक्षाएं बन गई हैं कि मेरे पास उनमें से कुछ की जांच किए बिना कोई और चारा नहीं है, परन्तु मेरी प्रार्थना है कि आप इन आयतों की सरल अवधारणा को न भूलें कि यदि आप विश्वासी रहते हैं *तो शैतान की हार होगी और आपकी विजय*!

हज़ार वर्ष के उलझाने वाले विचार

आपने ''मिलेनियम'' शब्द सुना होगा। ''मिलेनियम'' शब्द ''हज़ार'' के लिए लातीनी शब्द *mille* से निकला है। ''मिलेनियम'' ''हज़ार वर्ष'' कहने का ढंग मात्र है।[2] प्रकाशितवाक्य 20 बाइबल की उन जगहों में से है, जिनमें ''हज़ार वर्ष''[3] की बात है और केवल यहीं पर हज़ार वर्ष के *राज्य* की बात है।

लोगों ने प्रकाशितवाक्य में पाए जाने वाले सभी सांकेतिक अंकों में से मूल ''हज़ार वर्ष'' को ही क्यों चुना, यह मेरी समझ से बाहर है। फिर उन्होंने ''हज़ार वर्ष'' के अपने मूल विचार के आस-पास थियोलॉजी का एक जटिल प्रबंध क्यों बना लिया, मैं नहीं बता सकता। परन्तु यह हो गया है और अब हमें इसका सामना करना है।

''हज़ार वर्ष के दृष्टिकोण'' पर लिखने वाले आमतौर पर हर किसी को निम्न में से एक श्रेणी में बांटते हैं:

पोस्टमिलेनियलिज़्म

कई साल पहले पोस्टमिलेनियलिज़्म एक प्रसिद्ध शिक्षा थी। अब यह लुप्त सी हो चुकी है, परन्तु पुराने टीकाओं के पुनः मुद्रण में आपको इसके हवाले मिल जाएंगे।

''पोस्ट'' शब्द का अर्थ है ''पश्चात'' या बाद में। ''पोस्टमिलेयिलिज़्म'' का अर्थ है ''हज़ार वर्ष के बाद।'' यहां ध्यान द्वितीय आगमन की ओर दिलाया जाता है यानी पोस्टमिलेनियलिस्टों का मानना था कि मसीह ''हज़ार वर्ष'' पूरे होने के *बाद* आएगा। उनमें से कई ''मिलेनियम'' को मूल हज़ार वर्ष के रूप में नहीं, बल्कि ''सुनहरी युग'' के रूप में मानते थे, जिसमें संसार में सुसमाचार की विजय होगी और पूरे संसार में शांति और समृद्धि ही होगी। दो विश्वयुद्धों तथा बीसवीं शताब्दी की अन्य समस्याओं के साथ इस सहज आशावाद का अन्त हो गया।

प्रीमिलेनियलिज़्म

''प्री'' का अर्थ है ''पूर्व,'' सो ''प्रीमिलेनियलिज़्म'' का मूल अर्थ ''हज़ार वर्ष से पूर्व'' है। यहां फिर द्वितीय आगमन की बात है, जिसमें प्रीमिलेनियलिस्टों का मानना है कि मसीह ''हज़ार वर्ष'' *से पूर्व* आ रहा है और वे ''हज़ार वर्ष'' का अर्थ 365 दिनों वाले वर्ष के एक हज़ार वर्ष निकालते हैं। वे सिखाते हैं कि मसीह इस्राएल देश के

यरूशलेम नगर में एक हज़ार वर्ष तक सिंहासन पर बैठकर पृथ्वी पर शासन करने के लिए वापस आएगा।[4]

अमिलेनियलिज़्म

''अ'' ''न'' या ''नहीं'' अर्थ वाला एक पूर्वसर्ग है। यह एक मिथ्या नाम है, क्योंकि कई कथित ''अमिलेनियलिस्टों'' का प्रकाशितवाक्य के ''हज़ार वर्ष'' में विश्वास है; उनका केवल इतना मानना है कि ''हज़ार वर्ष'' पुस्तक के अन्य अंकों की तरह प्रतीकात्मक है। तौ भी ''हज़ार वर्ष'' को सांकेतिक अर्थ में लेने वालों के लिए यह थियोलॉजी का मानक शब्द है। थियोलॉजियन अर्थात धर्मशास्त्री मुझे ''अमिलेनियलिस्ट'' कहेंगे, चाहे अपने लिए मैं इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करता।

तीनों ''मिलेनियम विचारों'' में से कई बेतुके विचार प्रीमिलेनियलिज़्म से ही निकले हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को सूझबूझ और समझदारी से समझने की कोशिश करते हुए हमारा सामना प्रीमिलेनियलिज़्म से ही होता है; इसलिए प्रीमिलेनियलिज़्म की गहराई से जांच करना आवश्यक है।

हज़ार वर्ष की भ्रामक गलती

सदियों से कई लोग इस विचार की वकालत करते रहे हैं कि प्रकाशितवाक्य 20 के ''हज़ार वर्ष'' को (थोड़ा बहुत) मूल अर्थ में लेना चाहिए और यह कि यह शब्द कहीं न कहीं यीशु के द्वितीय आगमन से जुड़ा है।[5] परन्तु डिस्पेंसेशनल[6] प्रीमिलेनियलिज़्म, जो आज प्रसिद्ध है, बिल्कुल नया है। इसका आरम्भ प्लाईमाउथ बंधुओं के जॉन नेल्सन डार्बी द्वारा, पसार स्कॉफील्ड बाइबल से और प्रसिद्धि 1970 के दशक में हाल लिंडसे के लेखों से हुई।[7]

प्रकाशितवाक्य को समझने के इस ढंग की कुछ कमियों की चर्चा हम पहले ही कर चुके हैं, जिसमें पहली शताब्दी के सताए जाने वाले मसीहियों तथा हमारे प्रभु की खून से खरीदी कलीसिया पर इसे महत्व न देना शामिल है।[8] इस पाठ में हम उस पद में जिसे प्रीमिलेनियलिस्ट अपनी थियोलॉजी का मुख्य आकर्षण मानते हैं अर्थात प्रकाशितवाक्य 20 के सम्बन्ध में इस विश्वास की कुछ कमियों पर ध्यान देंगे।

(1) प्रीमिलेनियलिज़्म की मुख्य शिक्षाएं प्रकाशितवाक्य 20 की अपोकलिप्टिक भाषा की डांवांडोल नींव पर बनी हैं। ध्यान देने वाली बात है कि पृथ्वी पर मूल हज़ार वर्ष के राज के विचार के लिए यही बात सत्य है। जी.बी.केयर्ड ने लिखा है:

> नये नियम पर आने पर, हमें यूहन्ना के अलावा किसी और के लेख में मिलेनियम के विचार की कोई झलक नहीं मिलती। वास्तव में पौलुस मसीह के सभी शत्रुओं के उसके अधीन होने तक राज करते रहने की बात करता है, परन्तु यह वह राज है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ उसके ऊंचा किए जाने से आरम्भ होता है (1 कुरिन्थियों 15:24-28; तुलना मत्ती 13:41); ...[9]

अन्य शिक्षाएं भी प्रकाशितवाक्य 20 की अस्पष्ट भाषा जैसे कई शारीरिक पुनरुत्थानों के विचार पर आधारित हैं।

इस अध्याय को समझने के मूल ढंग के विषय में, रेअ समर्स ने कहा है:

> यदि प्रकाशितवाक्य 20 की 4, 5 और 6 आयतों को मिटा दिया जाता तो कोई भी पृथ्वी पर मसीह के मूल हज़ार वर्ष के शासन अर्थात यरूशलेम में अस्थायी सिंहासन की स्थापना तथा सांसारिक राजा के रूप में हज़ार वर्ष राज करने की बात का सपना भी नहीं ले सकता था। तौ भी अत्यधिक सांकेतिक आयतों के इस अनिश्चित आधार पर इतिहास के युगांत-विज्ञान, थियोलॉजी और दर्शन शास्त्र के नियम टिके हैं।[10]

(2) प्रीमिलेनियलिज़्म की अधिकतर शिक्षाएं प्रकाशितवाक्य 20 में नहीं मिलती; उन्हें इसमें डाला गया है। यद्यपि यह अध्याय हज़ार वर्ष के बारे में बताने वाला लगता है परन्तु उस राज्य की अधिकतर बातों में से (जैसा कि प्रीमिलेनियलिस्ट दावा करते हैं) अधिकतर विशेष रूप से गायब हैं।

उदाहरण के लिए *पृथ्वी पर* मसीह के राज की बात इसमें नहीं है। ध्यान से इस पद को पढ़ें तो आप पाएंगे कि सचमुच ऐसा ही है। प्रकाशितवाक्य 20 वाले हज़ार वर्ष के सम्बन्ध में विलियम हैंड्रिक्सन ने पूछा था, ''यह है कहां?'' और फिर उत्तर दिया था:

> (क) जहां सिंहासन है, क्योंकि लिखा है: ''फिर मैंने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए।'' अब पूरी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अनुसार मसीह और उसके लोगों का सिंहासन तो स्वर्ग में ही है: ...[11]
>
> (ख) जहां शहीदों की देह रहित आत्माएं हैं, क्योंकि हम पढ़ते हैं: ''मैंने उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने के कारण काटे गए थे।'' यूहन्ना ने *आत्माओं* को देखा न कि शहीदों को। उसके ध्यान में देह रहित आत्माएं हैं, क्योंकि हम उनके बारे में पढ़ते हैं: ''जिनके सिर काटे गए थे।'' ... आत्मा और देह में अन्तर फिर किया गया है: ''*उनकी* आत्माओं का... जिनके सिर काटे गए थे।'' ...
>
> (ग) जहां यीशु रहता है, क्योंकि लिखा है: ''वे ... *मसीह के साथ* राज करते रहे।'' इस प्रकार सवाल यह है कि अपोकलिप्स के अनुसार वह स्थान कहां है, जहां से महिमा पाया हुआ मध्यस्थ संसार पर राज करता है? यीशु कहां रहता? स्पष्टतया, *स्वर्ग में*! मेमने को प्रकाशितवाक्य 5 में उसके हाथ में से जो सिंहासन पर बैठा है, पत्री लेते *स्वर्ग* में ही दिखाया गया है। प्रकाशितवाक्य 12 स्पष्ट बताता है कि मसीह ''परमेश्वर और उसके सिंहासन में उठा लिया गया'' था।[12]

प्रीमिलेनियल की शिक्षाओं की सूची का प्रकाशितवाक्य 20 से गायब होना लगभग असीमित सा है यानी द्वितीय आगमन, कथित ''रैप्चर,'' दाऊद के सिंहासन अर्थात यरूशलेम नगर या शारीरिक यूहदियों का कोई उल्लेख नहीं है।

और भी दिलचस्प बात यह है कि प्रकाशितवाक्य 20 में *मसीह के* शासन की अवधि का कोई संकेत नहीं है। ''हज़ार वर्ष'' को अक्षरश: लेने पर भी यह पद केवल यह कहता है कि शहीद ''मसीह *के साथ* हज़ार वर्ष तक राज करते रहे''; इसमें यह संकेत नहीं है कि मसीह ने कब तक राज किया। (पुराने नियम के कई राजाओं ने समय के निश्चित काल के लिए अपने पिताओं *के साथ* राज किया, परन्तु ऐसे वाक्यों से यह पता नहीं चलता कि उनके पिताओं ने कितनी देर राज किया।[13])

जेम्स एफर्ड ने कहा है, ''इस वचन में उन विचारों को पाने का एकमात्र ढंग उन्हें बाहर से लाना है और मूल में उस वचन में क्या कहा गया था और उसका क्या अर्थ था, उसे समझने की कोशिश करने वाले के लिए यह कोई विकल्प नहीं है।''[14]

(3) प्रकाशितवाक्य 20 की सांकेतिक भाषा पर आधारित प्रीमिलेनियल शिक्षाएं वचन की अन्य स्पष्ट बातों से टकराव करती हैं:[15]

प्रीमिलेनियलिस्टों का दावा है कि प्रकाशितवाक्य 20 सिखाता है कि मसीह का राज्य भविष्य में किसी समय आरम्भ होगा, परन्तु वचन में कहीं और यह स्पष्ट सिखाया गया है कि मसीह का राज उसके पिता के पास उठाए जाने के समय से ही आरम्भ हो गया था। कई आयतों में मसीह के दाऊद के सिंहासन पर बैठने की बात मिलती है। उनमें से एक प्रेरितों के काम 2 अध्याय में पतरस का प्रवचन है। राजा दाऊद के विषय में इस प्रेरित ने कहा था:

> सो भविष्यवक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा। उसने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यवाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई। इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। इस प्रकार परमेश्वर ने दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को, जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी (प्रेरितों 2:30-36)।

ध्यान दें कि यीशु के पुनरुत्थान तथा स्वर्ग में उसके उठाए जाने से ''[दाऊद के] वंश में से एक व्यक्ति को [दाऊद के] सिंहासन'' पर बिठाने की प्रतिज्ञा पूरी हुई। यीशु को ''परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद'' दिया गया है और वह तब तक स्वर्ग में उसके साथ राज करता रहेगा, जब तक वह अपने शत्रुओं को पांवों की चौकी नहीं बना लेता।

1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस ने मसीह के राज्य के इस पहलू को दिखाया है:

> और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे, परन्तु हर

> एक अपनी-अपनी बारी से; पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग। इस के बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले लाए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा, वह मृत्यु है। क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है कि जिस ने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा जिस ने सब कुछ अपने अधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो (1 कुरिन्थियों 15:22-28)।

परमेश्वर ने ''सब कुछ मसीह के अधीन'' पहले की कर दिया है यानी मसीह इस समय स्वर्ग में राज कर रहा है। आयत 25 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''राज'' वर्तमान क्रिया में है।[16] आयत 25 का अनुवाद यह भी हो सकता है, ''जब तक उसके शत्रु उसके पांव तले नहीं आ जाते, तब तक उसके लिए राज करना आवश्यक है।'' आयत 26 कहती है कि पराजित होने वाला अन्तिम शत्रु मृत्यु होगी।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी यह स्पष्ट कर देती है कि मसीह इस समय राज कर रहा है। वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु *पहले ही* है (17:14; 19:16)![17]

मसीह के राज करने के साथ उसके राज्य का विषय ऐसे जुड़ा हुआ है कि उसे अलग नहीं किया जा सकता। आमतौर पर प्रीमिलेनियलिस्ट लोग यह सिखाते हैं कि यीशु भविष्य के किसी समय तक अपने *राज्य* पर राज नहीं करेगा, परन्तु बाइबल के स्पष्ट पद यह सिखाते हैं कि मसीह अपने राज्य पर इस समय राज कर रहा है[18] यानी उसका राज्य उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने और स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त से आरम्भ हो गया था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु ने यही प्रचार किया था कि राज्य ''निकट है'' (मत्ती 3:2; 4:17)। पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपने चेलों को बताया था कि *अपने जीवनकाल में ही* उन्होंने ''परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ'' देखना था (मरकुस 9:1)। स्वर्ग पर अपने ऊपर उठाए जाने से बिल्कुल पहले मसीह ने उन्हें बताया था कि जब पवित्र आत्मा आएगा तो उन्हें सामर्थ मिलेगी (प्रेरितों 1:6-8)। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उतरा (प्रेरितों 2:1-4) और इस प्रकार राज्य ''सामर्थ सहित'' आया।[19] तब पतरस यह बता पाया कि यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर राज करने लगा है।

कुलुस्सियों को पौलुस ने बताया था कि मसीह ने ''हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13)। इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को बताया, ''इस कारण हम इस राज्य को पाकर, जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें'' (इब्रानियों 12:28)।[20] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में फिर

वही शिक्षा मिलती है कि राज्य तो पहले से अस्तित्व में है: पहले अध्याय में यूहन्ना ने लिखा कि यीशु ने ''हमें एक राज्य बना दिया'' (आयत 6)। इसी अध्याय में यूहन्ना ने कहा कि वह अपने पाठकों के साथ ''यीशु के क्लेश, और *राज्य,* और धीरज में सहभागी'' था (आयत 9)। क्लेश और धीरज भविष्य में हज़ारों वर्ष बाद नहीं आने थे, और न ही राज्य ने।[21]

प्रकाशितवाक्य 20 पर आधारित प्रीमिलेनियम की एक और शिक्षा कई शारीरिक पुनरुत्थानों की है: विचार यह है कि ''हज़ार वर्ष'' के आरम्भ में भले लोगों का शारीरिक पुनरुत्थान होगा, और ''हज़ार वर्ष'' के अन्त में दुष्ट लोगों का शारीरिक पुनरुत्थान होगा।[22] ''पहले पुनरुत्थान'' (आयतें 5, 6) वाक्यांश पर हम इस पाठ में आगे चर्चा करेंगे, परन्तु अभी यह ध्यान देते हैं कि पवित्र शास्त्र के स्पष्ट पदों में केवल एक ही शारीरिक पुनरुत्थान की शिक्षा है: यीशु ने कहा कि ''वह समय आता है, कि *जितने* कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे, जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे'' (यूहन्ना 5:28, 29)। पौलुस ने कहा कि ''धर्मी और अधर्मी दोनों को जी उठना होगा'' (प्रेरितें 24:15ख)।

यीशु और पौलुस के इन कथनों से भले और बुरे दोनों के सामान्य शारीरिक जी उठने की बात मिलती है।[23] इनमें दुष्टों के पुरुत्थान की धर्मी लोगों के शारीरिक जी उठने के हज़ार वर्ष बाद की अनुमति नहीं है। हमें ''गेहूं में जंगली पौधे के यीशु के दृष्टांत की सच्चाई को गम्भीरता से (मत्ती 13:24-30, 36-43)'' लेने की आवश्यकता है, ''यानी कटनी के समय तक जो कि जगत का अन्त है, भलाई और बुराई दोनों साथ-साथ ही बढ़ेंगे।''[24]

प्रतीकात्मक भाषा पर आधारित *थ्योरियां* होने पर जो पवित्र शास्त्र की स्पष्ट *शिक्षा* के विपरीत हों, हमें सच किसे मानना चाहिए? डैनियल रस्सल ने इस प्रश्न पर विचार किया था:

> अपने अधिकार के लिए आप किसे लेंगे, सुसमाचार और पत्रियों की गम्भीर बातों को या प्रकाशितवाक्य की अति सांकेतिक भाषा को? मान लें कि आपके पास शीत युद्ध के तथ्यों को बताते मैक्मास्टर या रोडिस जैसे विश्वसनीय इतिहासकार हैं। फिर मान लें कि आपके पास *जॉन ब्राउन'स बॉडी* शीर्षक से लिखने वाले बैनट की तरह युद्ध का इतिहास लिखने वाला स्टीफन विन्सेंट बैनट जैसा कवि है। अपने अधिकार के मानक के रूप में आप किसे चुनेंगे? क्या आप बैनट के विवरण से मैक्मास्टर और रोडस के विवरण को मिलाने के लिए उनमें कुछ मिलाने की कोशिश करेंगे? निर्णय लेने की आपकी क्षमता खोने से पहले तो आप ऐसा नहीं करेंगे। यदि आप कुछ बदलते भी हैं तो आप इसे दूसरे ढंग से बदलेंगे।[25]

अन्य शब्दों में स्पष्ट पदों को प्रतीकात्मक वचनों की मनुष्यों की व्याख्याओं से मिलाने के बजाय प्रतीकात्मक पदों की व्याख्या इस प्रकार होनी चाहिए कि वे स्पष्ट पदों की शिक्षा से मेल खाते हों।

यीशु के समय के यहूदियों की तरह,[26] कुछ प्रीमिलेनियलिस्टों को आत्मिक आशिषों में संतुष्टि नहीं होती: तेज से भरे स्वर्ग की आशा काफी नहीं है; वे नई बनी पृथ्वी की आशा

चाहते हैं। यीशु के मुकुट के रूप में उन्हें यीशु का क्रूस रोमांचकारी नहीं लगता; मन की शांति के बजाय पृथ्वी पर शांति को महत्व देते हैं; और बीमारी के दूर होने की सम्भावना के सामने उन्हें पापों की क्षमा की प्रतिज्ञा बेकार लगती है। बर्टन कॉफमैन ने लिखा है:

> जो लोग पृथ्वी पर स्वर्ग के सपनों में ''रहते हैं'' जिसमें हर तरफ शान्ति और अत्यधिक सुन्दर फाटक के लिए प्रकाश हो, उनके साथ हमारी पूरी सहानुभूति है; परन्तु यदि ऐसे भ्रम में रहने वाले लोग सुन सकते हों तो नये नियम में ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं है, हमें परमेश्वर के राज्य में ''बड़े क्लेशों'' से होकर जाना है (प्रेरितों 14:22); हमें ''उसके दुःख'' उठाने हैं (रोमियों 8:17); भक्ति के साथ जीवन बिताने वाले ''सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12); मसीह के पीछे चलने वाले हर व्यक्ति को प्रतिदिन ''अपना क्रूस'' उठाना आवश्यक है (लूका 9:23)... ।[27]

नया नियम बिना समस्याओं वाले संसार की प्रतिज्ञा नहीं देता, बल्कि यह सिखाता है कि परमेश्वर ''ने हमें मसीह में *स्वर्गीय* स्थानों में सब प्रकार की *(आत्मिक)* आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)। सताए जाने वाले मसीही लोगों को पृथ्वी पर मसीही के लौटने की किसी शिक्षा ने नहीं, बल्कि अलग होकर ''मसीह के साथ'' रहने की आशा ने स्थिर रखा था। पौलुस ने कहा कि ''यह बहुत ही अच्छा है'' (फिलिप्पियों 1:23)। आमीन! परमेश्वर की आत्मिक प्रतिज्ञाएं मनुष्यों की कल्पनाओं वाले भौतिक लाभों से *कहीं बेहतर* हैं!

हज़ार वर्ष के रोमांच का सच! (20:4-6)

मनुष्यों की थ्योरियां यही हैं। आइए अब यह देखने के लिए कि वे वास्तव में क्या कहती हैं, 4 से 6 आयतों की समीक्षा करते हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि इस भाग की पुराने नियम की पृष्ठभूमि दानिय्येल 7 अध्याय में मिलती है (विशेषकर आयतें 9, 22 और 27)। हमेशा की तरह (परमेश्वर की प्रेरणा से) यूहन्ना को यह विशेष ध्यान मिला था।

हमारी समीक्षा आयत 4 के बीच से आरम्भ होगी। वहां यूहन्ना ने कहा, ''फिर मैंने ... उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे;[28] और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूरत की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी;[29]... ''।

जैसा पहले ही जोर देकर कहा गया था कि यूहन्ना ने शरीरों को नहीं, बल्कि देह रहित आत्माओं को देखा।[30] हमें अध्याय 6 का ध्यान आता है, जहां इस प्रेरित ने ''मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे'' (6:9)। अध्याय 6 वाले लोगों की तरह उद्धार पाए हुए इन लोगों को भी अपने विश्वास के कारण शहीद कर दिया गया था।[31] उन्हें ''सिर काटे गए'' कहा गया है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय कुल्हाड़ी या तलवार से सिर काटना मार डालने का पसंदीदा रोमी ढंग था। परन्तु निश्चय ही उनकी संख्या उन कुछ लोगों में थी, जो क्रूस पर चढ़ाए गए, अखाड़ों में जंगली जानवरों के सामने फैंके गए या

किसी अन्य तरीके से काटे गए, क्योंकि उन्होंने कैसर की पूजा नहीं की थी।

यह स्पष्ट नहीं है कि 20:4 में एक समूह का उल्लेख है या दो का। कुछ लोगों का मानना है कि यूहन्ना ने एक समूह अर्थात शहीदों को देखा और वह भाग जिसका आरम्भ ''जिन्होंने न उस पशु की पूजा की'' केवल उन्हीं का वर्णन है। अन्य यह बहस करते हैं कि मूल शास्त्र के शब्दों से[32] दो समूहों का संकेत मिलता है। यह महत्वहीन प्रश्न है, परन्तु मैं इस विचार के पक्ष में हूं कि यूहन्ना ने देह रहित आत्माओं के दो समूहों अर्थात शहीदों और उनको जो रोमी सरकार के दबाव में नहीं आए थे, देखा। प्रकाशितवाक्य शहीदों को किसी अन्य प्रकार से सताए जाने वालों जो विश्वासी रहे थे, ऊंचा नहीं उठाता।[33]

विलियम बार्कले ने लिखा है, ''सताव के दिनों में प्राचीन कलीसिया में दो शब्दों का इस्तेमाल होता था। अपने विश्वास के लिए वास्तव में मर जाने वाले *शहीद;* मसीह के प्रति अपनी वफादारी के लिए मृत्यु को छोड़ दूसरे हर कष्ट सहकर *अंगीकार करने वाले*।''[34] हैनरी बी.स्वेट ने उन अंगीकार करने वालों को ''वे जो वास्तव में शहीद तो नहीं हुए थे परन्तु मसीह के कारण कष्ट, निंदा, जेल, वस्तुओं की हानि, घरों से निकाले जाना और निजी सम्बन्धों का टूटना'' कहा है।[35] वचन के इस भाग में इस बात पर जोर है कि मृत्यु का कारण चाहे कुल्हाड़ी रही है या हृदयाघात उनमें से हर कोई मरने तक प्रभु का *विश्वासी* था।

जैसा कि हम देखेंगे इस पद को हर मसीही पर लागू किया जा सकता है, परन्तु इसमें बल उन लोगों पर है, जिन्होंने अपने विश्वास के लिए कष्ट सहा और विशेषकर उन पर जो शहीद हो गए थे।

शासन करने पर पुनः आश्वासन

आरम्भिक मसीही लोगों में पाया जाने ज्वलन्त प्रश्न था, ''मरने तक विश्वासी रहने वालों का क्या हुआ?'' क्या वे मर गए हैं और उन्हें भुला दिया गया है या उनका बलिदान किसी काम आया? यूहन्ना का उत्तर यह है: ''फिर मैंने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; ... वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे'' (आयत 4)।

इस आयत (और इस और इससे अगली आयत) में ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं है, जो कहीं पर भी हर विश्वासी मसीही पर लागू न होती हो। उदाहरण के लिए प्रकाशितवाक्य 3 में यीशु ने जय पाने वाले *हर किसी* से प्रतिज्ञा की: ''मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बिठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया'' (आयत 21)। फिर, प्रकाशितवाक्य 5:10 में मूलत: 20:4, 6 वाली शब्दावली का ही इस्तेमाल किया: ''और [तू ने] उन्हें [मसीह के लहू द्वारा उद्धार पाए *सब*] हमारे परेमश्वर के लिए राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज करते हैं'' (1:6 भी देखें)।

5:10 का अध्ययन करते हुए हमने यह ज़ोर दिया था कि मसीही लोग कई प्रकार से राज करते हैं: (1) मसीही लोग मसीह का राज्य हैं (प्रकाशिवाक्य 1:6), जो कि कलीसिया

है (मत्ती 16:18, 19)। (2) क्योंकि पमरेश्वर उनका पिता है (1 कुरिन्थियों 1:3), इसलिए वे शाही परिवार के लोग हैं। (3) क्योंकि मसीह इस समय राज कर रहा है (प्रेरितों 2:33-36; 1 कुरिन्थियों 15:25) और मसीही लोग ''मसीह में'' हैं (2 कुरिन्थियों 5:17), इसलिए वे उसके राज के भागी हैं (4) मसीही लोग उद्धार पाए हुए हैं इसलिए अब मृत्यु का राज उन पर नहीं है; बल्कि उन्हें ''जीवन में यीशु मसीह के द्वारा राज'' करने की शक्ति दी गई है (रोमियों 5:17; 14 और 21 आयतें भी देखें)। हमने जोर दिया था कि यूहन्ना के समय के मसीही लोगों के दृष्टिकोण से पृथ्वी पर राज करने के विचार का अर्थ मुख्यतया *विजय* था। मसीह की सामर्थ मिलने से मसीही लोग जीवन द्वारा उनके रास्ते में लाई जाने वाली हर रुकावट पर काबू पाते हुए अपने जीवनों और भविष्य का नियन्त्रण में रखा था।[36]

इस सबसे एक स्वाभाविक सवाल उठता है कि यदि आम मसीहियों को यीशु के साथ राज करने की प्रतिज्ञा दी गई थी तो शहीद होने वाले के सम्बन्ध में इस प्रतिज्ञा को दोहराने का क्या उद्देश्य था? इसका उत्तर यह है कि आरम्भिक मसीहियों को यह पता होना चाहिए था कि मृत्यु से यह प्रतिज्ञा खत्म नहीं होती, बल्कि पूरी होती है! फिर मैं इस बात पर जोर देता हूं कि ''*हज़ार* वर्ष के'' राज्य के रूपक से शहीदों के राज अर्थात उनकी जय की पूर्णता की *सम्पूर्णता* को रेखांकित किया गया।

शहीदों के राज करने की एक बात यह है कि ''उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया'' (आयत 4क)। ऐसा ही वाक्यांश दानिय्येल 7:22 में मिलता है जिसका अर्थ ''निर्णय उनके पक्ष में गया'' था, अन्य शब्दों में उन पवित्र लोगों का न्याय किया गया। यहां वही अर्थ हो सकता है, परन्तु प्रकाशितवाक्य 20 का संदर्भ उनके शत्रुओं पर जय के पक्ष में है: पृथ्वी पर उनके शत्रु उन पर न्याय करने के लिए बैठते थे और उन्होंने उन्हें मृत्यु दण्ड दिया था। अब उनकी भूमिका बदल गई थी, और *वे* न्याय की गद्दी पर बैठे थे!

मसीही लोगों द्वारा दुष्टों का न्याय करने के लिए बैठने का विचार नया नहीं था। यीशु ने अपने चेलों को बताया था कि वे ''सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय'' करेंगे (लूका 22:30)।[37] पौलुस ने यह कहते हुए कि वे ''स्वर्गदूतों का न्याय''[38] करेंगे, लिखा कि ''पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे'' (1 कुरिन्थियों 6:2, 3)।[39] इन पदों को समझना आसान नहीं है, परन्तु अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि मसीही लोग दूसरे लोगों के भविष्य का निर्णय लेंगे; जो कि परमेश्वर का विशेषाधिकार है।[40] दूसरी ओर ऐसे कई अर्थ है, जिसमें मसीही लोग जगत का ''न्याय'' *करते* हैं: हम वचन का प्रचार करते अर्थात न्याय के लिए प्रभु का मानक बताते हैं (यूहन्ना 12:48), जो पाप को नंगा करता है। इसके अलावा अपने जीवनों से हम दिखाते हैं कि परमेश्वर के मापदण्डों से जीवन बिताना सम्भव है, इस प्रकार हम ऐसा न कर पाने वालों को दोषी ठहराते हैं।

परन्तु प्रकाशितवाक्य 20 वाला ''न्याय करना'' उस विषयवस्तु को बढ़ाता ही प्रतीत होता है कि प्रभु के लिए मर चुके लोग राज कर रहे हैं अर्थात वे जयवन्त हुए थे! शैतान को फैंक दिया गया था और उन्हें उठाया गया था!

पुनरुत्थान की बात

जय का विचार आयत 4 के अन्तिम भाग तक जारी रहता है: ''वे जीवित होकर[41]... राज करते रहे।''

प्रीमिलेनियलिस्ट लोग इस ''जीवित होकर'' को मसीह के वापस आने के बाद होने वाला शारीरिक पुनरुत्थान बनाने की कोशिश करते हैं। परन्तु ध्यान दें कि ''जीवित'' ''राज करने'' से जुड़ा है और देह रहित आत्माएं दृश्य के आरम्भ में स्वर्ग में से सिंहासनों पर बैठी हुई (राज कर रही[42]) थीं। यह पद यह नहीं सिखाता कि *किसी दिन* शहीद जीवित होकर यीशु के साथ राज करेंगे। वचन की बात से यह पता चलता है कि विश्वासी मृतक *पहले ही* जीवित थे और राज कर रहे थे।

फिर जीवन की प्रतिज्ञा मसीही लोगों को दी जाने वाली सामान्य प्रतिज्ञा है (देखें यूहन्ना 5:24) और पाप से उद्धार को आमतौर पर पुनरुत्थान (जीवन पाना) के रूप में दिखाया जाता है। पौलुस ने कहा, ''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें'' (रोमियों 6:4)। उसने और लिखा, ''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; ... जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया'' (इफिसियों 2:4-6)। फिर उसने कहा, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है'' (कुलुस्सियों 3:1)।

एक बार फिर स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि ''यदि सभी मसीही 'जिलाए गए' हैं और उनमें जीवन है तो पवित्र आत्मा यह जोर क्यों देता है कि शहीद 'जीवित' हो गए?'' उत्तर मूलत: पहले वाला ही है: यह ज़ोर देने के लिए कि किसी पवित्र जन की मृत्यु मसीह में उसके ''नये जीवन'' का अन्त नहीं है, बल्कि उसकी मृत्यु उसे ''ऐसे जीवित करती है'' जैसे वह पहले सोच भी नहीं सकता था।

आयत 5 में शहीदों के और अन्य विश्वासी मृतकों के इस ''जीवित होने'' को ''पहला पुनरुत्थान'' कहा गया है।[43] जैसे पहले कहा गया था, ''पहले पुनरुत्थान'' का मूल हज़ार वर्ष के काल्पनिक राज के आरम्भ में धर्मियों के जी उठने से कोई वास्ता नहीं है, बल्कि संदर्भ में यह किसी के मसीह में बपतिस्मा लेने पर आरम्भ होने वाला आत्मिक पुनरुत्थान है, जो ''प्रभु में'' मरने पर चरम को पहुंचता है (प्रकाशितवाक्य 14:13)। यह इस संसार से विदा होकर ''मसीह के पास होने'' (फिलिप्पियों 1:23) का परिणाम है, जिससे व्यक्ति अपने आप को ''प्रभु के साथ रहते'' पाता है (2 कुरिन्थियों 5:8)। यह मसीह की प्रतिज्ञा का पूरा होना है कि ''जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा'' (मत्ती 10:39)। प्रकाशितवाक्य 2:10 इसे ''जीवन का मुकुट'' कहता है। मरने तक प्रभु के विश्वासी रहने वालों को ''जीवन'' मिलता है, जिसे अंग्रेज़ी में "Life" के लिए बड़े "L" से लिखा जाता है। अन्त में उन्हें पता चलता है कि वास्तव में जीवन क्या है!

उनके जो प्रभु में मरे हैं विपरीत ''जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे'' (आयत 5क)। ''शेष मरे हुए'' वाक्यांश का अर्थ इस पर निर्भर करता है कि यूहन्ना ने आयत 4 में किन्हें देखा।[44] संदर्भ में यह उनकी बात लगती है, जिन्होंने ''यीशु की गवाही और परमेश्वर के वचन'' को *नहीं* माना था, अर्थात जिन्होंने ''उस पशु की और उसकी मूर्ति की पूजा की'' *थी* और जिन्होंने ''अपने माथे और हाथों पर [उस पशु की] छाप'' मान ली *थी* (आयत 4)।

NASB में ''हज़ार वर्ष के पूरा होने तक जीवित *नहीं हुए*'' है। वाक्य रचना के कारण कई लोग इसका अर्थ शारीरिक पुनरुत्थान की तरह ''जी उठना'' निकालते हैं।[45] परन्तु मूल शास्त्र में इतना कहा गया है कि ''मरे हुए शेष लोग हज़ार वर्ष पूरा होने तक नहीं *जीए*।''[46] अन्य शब्दों में उन्हें ''मसीह में'' मरने वालों को मिलने वाली आत्मिक आशिषें नहीं मिलीं। पृथ्वी पर तो मसीही लोगों को मार दिया गया था, जबकि उनके सताने वाले जीवित थे; मृत्यु के बाद जीवित मसीही लोग थे, जो कि वास्तविक जीना है जबकि उनके शत्रु मरे हुए थे, मृत थे।[47]

''हज़ार वर्ष'' वह समय है जब शैतान को बांधा गया है और मरे हुए मसीही जीवित हैं और राज कर रहे हैं, जो कि अभी की बात है।[48] ''हज़ार वर्ष'' के ''पूरा'' होने की बात इस युग के अन्त की होनी चाहिए जब मसीह वापस आएगा, मरे हुए जी उठेंगे और सबका न्याय होगा। उस नाटकीय क्रम पर चर्चा इस अध्याय की 11 से 15 आयतों का अध्ययन करने के समय की जाएगी।[49]

आनंद करने का कारण

आयत 6 से पुस्तक के पांचवें धन्य वचन के साथ यह भाग समाप्त हो जाता है। इसका आरम्भ, ''धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरुत्थान का भागी है; ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, ...'' से होता है। ''दूसरी मृत्यु'' का परिचय 20:14 में दिया गया है: ''यह आग की झील [अन्य शब्दों में, नरक] दूसरी मृत्यु है।'' प्रभु के विश्वासी रह कर मरने वालों को नाश होने की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। कितनी बड़ी आशीष है!

यूहन्ना ने समाप्त किया ''पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे'' (आयत 6)। नया नियम सिखाता है कि *सब* मसीही लोग याजक है (1 पतरस 2:5, 9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)। दोहराने का जोखिम उठाते हुए मैं पूछता हूं, ''तो फिर प्रकाशितवाक्य 20 क्यों ज़ोर देता है कि शहीद और मरने वाले अन्य विश्वासी याजक हैं?'' इस ज़ोर दिए जाने से इस बात की पुष्टि होती है कि मृत्यु हमें परेमश्वर से अलग नहीं करती, यानी मृत्यु इस बात को नकारा नहीं करती कि हम क्या हैं और कौन हैं, अर्थात मृत्यु का अर्थ यह नहीं है कि आशिषें खत्म हो गई हैं, बल्कि हम देखते हैं कि वे आशिषें और बेहतर और अदभुत हो जाती हैं! मेरा एक पुराना मित्र कहा करता था, ''अभी तो तुमने देखा ही कुछ नहीं!''

सारांश

यह पाठ आसान नहीं था, परन्तु मेरी प्रार्थना है कि आप 20:4-6 में दिए जाने वाले मुख्य ज़ोर से न भटकें। यदि आप मरने तक विश्वासी बने रहें तो शैतान हार जाएगा और आपकी जीत होगी!

वचन के हमारे इस भाग में जोर पहली शताब्दी में अपने विश्वास के लिए मरने वालों पर है। यह जोर दिया गया था कि मृत्यु ने आरम्भिक मसीही लोगों को दी जाने वाली प्रतिज्ञाओं को नकारा नहीं किया अर्थात मरने वाले विश्वासी लोग अभी भी उन प्रतिज्ञाओं का आनंद ले रहे थे। अब अन्त में मैं उसे बिल्कुल मोड़ना चाहता हूं। प्रकाशितवाक्य 20 में शहीदों को जिन आशिषों की प्रतिज्ञा की गई है, वे *आपके* लिए भी हो सकती है: यानी *आप* जान सकते हैं कि वास्तविक जीवन क्या है; *आप* प्रभु के याजक बन सकते हैं; *आप* मसीह के साथ राज कर सकते हैं। इसके अलावा आप इसे ''हज़ार वर्ष तक'' अर्थात पूर्णतया और सम्पूर्णता से कर सकते हैं। है न अदभुत?

ये आशिषें आपकी हो *सकती* हैं, परन्तु क्या वे आपकी *हैं*? क्या आपने स्वयं को दीनता पूर्वक आज्ञा पालन के द्वारा मसीह को दिया है? क्या आपने उसमें ''अपना जीवन छिपाया'' है? (देखें कुलुस्सियों 3:3.) यदि नहीं तो उसकी आशिषों को ग्रहण करने की प्रतीक्षा न करें कि समय ही निकल जाए![50]

टिप्पणियां

[1]इस पुस्तक के पाठ ''शैतान का बान्धा जाना'' में ''एक हज़ार'' के संकेत पर नोट्स देखें। [2]आपको इससे मिलता-जुलता अंग्रेज़ी शब्द chiliasm (सतयुग) भी मिल सकता है। यह ''हज़ार'' के लिए यूनानी शब्द (*chilos*) से लिया गया है और इसका इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य 20 के ''हज़ार वर्ष'' की विशेष शिक्षा के लिए किया जाता है। [3]बाइबल में कई जगह ''हज़ार वर्ष'' शब्द का इस्तेमाल समय की लम्बी, अनिश्चित अवधि के लिए किया गया है (भजन संहिता 90:4; सभोपदेशक 6:6; 2 पतरस 3:8)। इनमें से किसी भी हवाले में ''हज़ार वर्ष'' का इस्तेमाल एक हज़ार कैलेंडर वर्षों के लिए कहीं नहीं हुआ। [4]कई प्रीमिलेनियलिस्टों के विश्वास को विस्तार से देखने के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''अच्छी शुरुआत मानो आधा काम पूरा हो गया है'' में देखें। [5]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों को इस विचार को मानने वालों (विशेषकर कुछ कथित ''चर्च फ़ादर्स'') का नाम देना अच्छा लगता है, जैसे वे सब उससे जुड़े हों जिसे आधुनिक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा बताती है। यह सत्य है कि कुछ आरम्भिक मसीही लेखक स्पष्ट रूप से मसीहा के भौतिक राज्य की यहूदी भ्रांतियों से प्रभावित थे। परन्तु यह सत्य *नहीं* है कि वे आज की हज़ार वर्ष के युग की शिक्षा के हास्यास्पद विचारों की शिक्षा देते थे। इस विषय की संक्षिप्त समीक्षाएं विलियम बार्कले, *द रैवेलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 190-91 और आर. सी. एच. लेंसकी, *द इंटरप्रटेशन ऑफ़ सेंट जॉन'स रैवलेशन* (मिनियापुलिस, मिनेसोटा: ऑगसबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1963), 570 में मिलती है। [6]''डिस्पेंसेशनल'' शब्द उस शिक्षा के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें मसीह की मृत्यु और उसके द्वितीय आगमन के बीच का समय ''डिस्पेंसेशन्स'' अर्थात समय के अलग-अलग कालों में बांटा जाता है, जिनमें परमेश्वर ने मनुष्यजाति से अलग-अलग प्रकार से व्यवहार किया। उदाहरण के लिए जे. एन. डर्बी ने

सिखाया कि प्रेरितों 2 से 7 मसीहियत का ''यहूदी युग'' (व्यवस्था पालक होने का युग) था, जबकि प्रेरितों 8 के बाद ''अन्यजातियों का युग'' (अनुग्रह का युग) है। अधिकतर डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिस्टों का कहना है कि हम इस समय ''कलीसिया के युग'' में रह रहे हैं, जबकि हज़ार वर्ष का शासन ''राज्य का युग'' होगा। इस प्रकार की शिक्षाएं इस मूल अवधारणा का उल्लंघन हैं कि ''परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता'' (प्रेरितों 10:34)। इन ''अन्तिम दिनों'' में (प्रेरितों 2:17; इब्रानियों 1:2) परमेश्वर को कुछ लोगों के लिए एक प्रबन्ध और दूसरों के लिए अलग प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं है।[7] *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''अच्छी शुरुआत, मानो आधा काम पूरा हो गया है'' देखें।[8]वही।[9]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 251.[10]रेअ समर्स, *वर्थी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 203.

[11]''सिंहासन'' शब्द प्रकाशितवाक्य में सैंतालीस बार मिलता है; शैतान और पशु के सिंहासन के हवालों के अपवाद के साथ सिंहासन स्वर्ग में ही होता या होते हैं। [12]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 230-31. [13]यहूदा और इस्राएल के राजाओं के कालक्रम पर काम करते हुए आप पाएंगे कि कई राजाओं के शासन दोहरे हैं। उदाहरण के लिए आहाज़ ने बारह साल तक अपने पिता के साथ शासन किया और मनश्शे ने भी आठ-नौ साल तक हिज़किय्याह के साथ शासन किया। ऐसे कथनों से पता चलता है कि ये सह-शासक थे, परन्तु उनमें यह नहीं बताया गया कि पिताओं ने कितना समय राज किया। इसकी एक और चर्चा जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 303 में मिलती है। [14]जेम्स एम. एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 118. [15]फ्रैंक पैक ने दिखाया कि डिस्पेंसेशनलवाद ''छुटकारे की योजना और परमेश्वर के मूल उद्देश्य के विस्तृत पुनर्निर्माण'' को शामिल करता है (*रैवलेशन,* पार्ट 2 [आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965], 48)। तौ भी इस भाग में हमारा ध्यान प्रकाशितवाक्य 20 से जुड़े विरोधाभासों पर है। [16]अंग्रेज़ी में क्रिया है जो विशेषण, क्रिया विशेषण या संज्ञा का काम करता है। [17]और वचन भी दिए जा सकते हैं जो सिखाते हैं कि दुख उठाने के बाद यीशु अपने पिता के साथ सिंहासन पर बैठने के लिए गया। उदाहरण के लिए देखें इब्रानियों 12:2. [18]कई प्रीमिलेनियलिस्ट यीशु के वर्तमान राज और इस बात से कि राज्य इस समय है, बाइबल की शिक्षा से परिचित हैं। इस कारण वे कहते हैं कि ''*एक अर्थ में* यीशु अब राज कर रहा है।'' कई बार वे वर्तमान राज्य के लिए kingdom का (छोटा ''k'') और हज़ार वर्ष के राज्य के लिए ''Kingdom'' का (बड़ा ''K'') में अन्तर करते हैं। ऐसी भिन्नताएं मनुष्य द्वारा बनाई गई हैं और उन्हें पवित्र शास्त्र का कोई समर्थन नहीं है। [19]कई लेखक ''तेरा राज्य आए'' (मत्ती 6:10) आदर्श प्रार्थना जैसे वे वही शब्द हों जिनसे हमें आज प्रार्थना करनी है, जबकि वह भावना प्रेरितों 2 में स्थापित राज्य के *पहले* व्यक्त की गई थी। यीशु प्रचारकर रहा था कि राज्य ''निकट'' है और उसने सुझाव दिया कि उसके चेले उस प्रतिज्ञा के पूरा होने के लिए प्रार्थना करें। प्रतिज्ञा पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हो गई *थी,* जब पहला सुसमाचार संदेश सुनाए जाने के समय पतरस ने प्रचार किया था और तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया था। [20]यूनानी शब्द का अनुवाद ''पाकर'' एक वर्तमान कृदंत है, जिसका अर्थ है कि इसका अनुवाद ''पा रहे'' हो सकता है (देखें KJV)। वर्तमान कृदंत मुख्य क्रिया के कार्य के साथ कार्य करने का संकेत है (यहां पर क्रिया का अनुवाद ''आओ दिखाएं'' वाक्यांश के द्वारा किया गया है)। हमें कृतज्ञता दिखानी चाहिए क्योंकि हमें एक राज्य मिला है।

[21]जब हम विद्यमान राज्य की बात करते हैं तो हम कलीसिया की बात कर रहे होते हैं। मत्ती 16:18, 19 तथा अन्य वचनों में ''राज्य'' और ''कलीसिया'' शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया गया है। ''राज्य'' शब्द केवल उस क्षेत्र के लिए है, जिस पर प्रभु शासन करता है। इस क्षेत्र का विशेष सांसारिक प्रदर्शन कलीसिया है, जबकि इसका स्वर्गीय प्रदर्शन स्वर्ग ही है। इस बात में दम है कि हमें भविष्य में राज्य मिलेगा जब हम अन्त में स्वर्ग में जाएंगे, परन्तु नया नियम स्पष्ट करता है कि *इस समय* मसीह अपने राज्य/कलीसिया पर राज कर रहा है। [22]कई प्रीमिलेनियलिस्ट सिखाते हैं कि दो से *अधिक* शारीरिक पुनरुत्थान होंगे: (1) ''रैप्चर'' के समय जो विश्वासियों का जी उठना है; (2) सात वर्ष के ''रैप्चर/क्लेश'' के समय

के अन्त में जो, इस काल के दौरान विश्वासी बने और मर गए (इसे कई बार ''बटोरन का'' पुनरुत्थान कहा जाता है); (3) हज़ार वर्ष के राज्य के अन्त अर्थात उन लोगों का पुनरुत्थान जो हज़ार वर्ष के राज्य के दौरान मसीह बने और मर गए; (4) शैतान को आग की झील में फैंके जाने के बाद, दुष्टों का पुनरुत्थान। कई लोग इस सूची में जोड़ देते हैं। कुछ ऐसे हैं जो सिखाते हैं कि *सात* पुनरुत्थान होंगे। [23]कई और आयतें सिखाती हैं कि एक सामान्य पुनरुत्थान होगा, उदाहरण के लिए देखें दानिय्येल 12:2. उन वचनों पर भी विचार करें जो केवल ''मृतकों के पुनरुत्थान'' की बात करते हैं: मत्ती 22:31; प्रेरितों 24:21; इब्रानियों 6:2. बहुल पुनरुत्थानों का विषय, बहुल न्यायों के विषय से जुड़ा है। बहुल न्यायों की संक्षिप्त चर्चा के लिए इस पुस्तक के पृष्ठ ''न्याय की पांच बातें, जो आपको पता होनी आवश्यक हैं'' देखें। [24]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 95. [25]डैनिय्यल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: द अबिंग्डन प्रैस, 1935), 227. [26]यहूदी लोग सांसारिक राजा की राह देख रहे थे, जिसने सांसारिक सिंहासन पर बैठना था और उनकी ओर से सांसारिक लड़ाई लड़नी थी। यीशु ''केवल'' आत्मिक राजा था, इसलिए उन्होंने उसे ठुकरा कर क्रूस पर चढ़ा दिया। [27]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 469. [28]यूहन्ना के निर्वासन (1:9) और वेदी के नीचे शहीद होने वाली आत्माओं (6:9) के कारण एक ही थे। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' में 1:9 पर नोट्स देखें। [29]दूसरे पशु (झूठे भविष्यवक्ता) का लक्ष्य लोगों से पहले पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करवाना और उनके माथों और हाथों पर उसकी छाप कराना था (13:15-17)। झूठे भविष्यवक्ता से इस प्रकार प्रभावित होने वालों को अन्त में ''चैन न'' मिलना था (14:11) जबकि उसका सामना करने वालों ने अन्त में यीशु के साथ राज करना था (20:4)। इस्तेमाल हुए शब्दों के महत्व के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''वह बड़ा भरमाने वाला'' में 13:16-18 पर नोट्स देखें। [30]हैंड्रिक्सन ने लिखा, ''सच है कि 'आत्माओं' शब्द का अर्थ कई बार 'लोगों' होता है, उदाहरण के लिए उत्पत्ति 46:27. परन्तु उस स्थिति में आप 'आत्माओं' के लिए 'लोगों' शब्द लगा सकते हैं। प्रकाशितवाक्य 20 में यहां आप ऐसा नहीं कर सकते!'' (230)।

[31]सम्भवतया हमें अध्याय 6 और 20 के दोनों समूहों को एक ही समूह के रूप में और अध्याय 20 को ''कब तक?'' के उत्तर के भाग के रूप में देखना चाहिए। [32]मूल धर्मशास्त्र में दूसरे भाग का आरम्भ ''और ऐसे'' (या ''और वे'') से होता है। विद्वान यूनानी धर्मशास्त्र के अन्य भेदों की ओर भी ध्यान दिलाते हैं, जिन्हें वे इस प्रमाण के रूप में लेते हैं कि ध्यान में *दोनों* समूह थे। [33]एक उदाहरण है कि याकूब शहीद की मृत्यु मरा (प्रेरितों 12:1, 2), जबकि उसके भाई यूहन्ना को पतमुस में ''केवल'' निर्वासित किया गया (प्रकाशितवाक्य 1:9)। तौ भी दोनों यीशु के (कष्ट के) बपतिस्मे से बपतिस्मा पाए हुए थे (मरकुस 10:38, 39)। जहां तक प्रभु की बात थी, कोई बलिदान दूसरे से बढ़कर नहीं था। [34]बार्कले, 192. [35]वही। बार्कले ने इस विचार को हैनरी बी. स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं.,1908; रीप्रिंट, गैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 262 से संक्षिप्त किया। [36]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''मेमना योग्य है'' पाठ देखें। [37]यह प्रेरितों को दी गई प्रतिज्ञा थी; शायद यह इस तथ्य से मेल खाती है कि वे अपनी शिक्षाओं तथा लेखों के द्वारा ''न्याय करते'' हैं। [38]ये पाप करने वाले वे स्वर्गदूत हो सकते हैं, जिनके बारे में 2 पतरस 2:4 में बताया गया है। [39]इस वचन का एक सम्भावित ज़ोर यह है कि जैसे हम मसीह के साथ राज करते हैं वैसे ही हम उसके साथ न्याय करेंगे यानी निजी तौर पर नहीं बल्कि उसके द्वारा हम ऐसा करते हैं। [40]न्याय के अलग दृश्य में केवल *एक ही* न्यायी है (20:11) जो सब मनुष्यों का भविष्य तय करता है।

[41]मूल धर्मशास्त्र में मूलत: ''वे रहे'' है (देखें KJV और ASV)। [42]बाइबल की शब्दावली में सिंहासन पर ''बैठना'' राज करना ही है (मत्ती 22:44; 25:31)। [43]''यह पहला पुनरुत्थान है'' वाक्य अधिक स्पष्ट है, क्योंकि वचन यह स्पष्ट नहीं करता कि ''यह'' किसे कहा गया है। (यह इसके तुरन्त बाद आने वाले वाक्य की बात नहीं हो सकती।) मैं इसे आयत 4 के वाक्य के अन्त का वाक्यांश कहता हूं: ''वे जीवित होकर मसीह के साथ ... राज करते रहे।'' कइयों का मानना है कि यह यीशु के पुनरुत्थान (''पहले

फल''; 1 कुरिन्थियों 15:20) की बात है, जो हमारे अपने पुनरुत्थान का नमूना है। मुझे यह भी ध्यान देना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य की कठोर अतिवादी विचार की ओर झुकने वालों का मानना है कि ''पहला पुनरुत्थान'' मसीहियत, विशेषकर रोमी साम्राज्य पर मसीहियत की विजय के कारण से जुड़ा है। (वे आमतौर पर कॉन्सेंटटाइन के आदेश की बात करते हैं, जिसने मसीहियत को ''कानूनी'' धर्म बनाया।) वे अध्याय 11 के दो गवाहों के पुनरुत्थान में समानता बनाते हैं और सुझाव देते हैं कि गवाहों का ''पुनरुत्थान'' इस बात का संकेत था कि उनका कार्य मरा नहीं था।[44]उदाहरण के लिए यदि यूहन्ना ने केवल आयत 4 वाले शहीदों को देखा तो ''शेष मरे हुए'' वे विश्वासी मसीही हो सकते हैं, जो ''प्राकृतिक'' रूप से मरे थे। इससे ''जीवित'' (''राज कर रहे'' और ''न्याय कर रहे'' के साथ) एक विशेष आशीष बन जाती है जो केवल उन्हें ही मिली जो शहीद हुए थे। परन्तु जैसा कि पाठ में ज़ोर दिया गया है, ''जीवन'' की प्रतिज्ञा सब विश्वासियों के लिए थी। तो फिर ''शेष मरे हुओं'' को वे समझना बेहतर होगा जो प्रभु से बाहर मरे।[45]कई अनुवादों में तो ''फिर'' शब्द तक जोड़ा गया है, जो और भी उलझाने वाला है। परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में ''फिर'' शब्द नहीं मिलता। KJV में आयत 5 में ''lived not'' शब्द सही है, परन्तु फिर उसमें भी फिर के लिए ''again'' शब्द जोड़ने की गलती की गई है।[46]ऊपर टिप्पणी 39 देखें।[47]आयत 5 का अर्थ है कि ''हज़ार वर्ष'' पूरे हो जाने पर ''शेष मरे हुए'' ''जीवित'' *होंगे* या ''जीएंगे।'' मसीह के वापस आने पर दुष्ट लोग जी उठेंगे। वे न्याय के लिए और फिर ''दूसरी मृत्यु'' (20:14) के दण्ड के लिए परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। ''जीवन'' का उनका काल यदि इसे काल कहा जाए, बहुत ही छोटा होगा।[48]इस पर अगले पाठ में मैं और बात करूंगा।[49]इस पुस्तक में ''न्याय की पांच बातें जो आपको पता होनी आवश्यक हैं'' पाठ देखें।[50]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को बताएं कि वे मसीही कैसे बन सकते है (मत्ती 16:15, 16; प्रेरितों 2:37, 38) और परमेश्वर के भटके हुए बालक वापस घर कैसे आ सकते हैं (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

[51]थॉमस एफ. टॉरेंस, द *अपोकलिप्स टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 132-41.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. 20:1-3 और 20:4-6 में क्या अन्तर मिलता है? पाठ के अनुसार 1 से 6 आयतों का मूल संदेश क्या है?
2. ''मिलेनियम'' शब्द का क्या अर्थ है? ''पोस्टमिलेनियलिज़्म,'' ''प्रीमिलेनियलिज़्म'' और ''अमिलेनियलिज़्म'' का क्या अर्थ है? इन शब्दों के अर्थों में तुलना और अन्तर बताएं।
3. ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के ''अच्छी शुरुआत मानो आधा काम हो गया'' पाठ में अधिकतर प्रीमिलेनियलिस्टों की कुछ मूल शिक्षाओं पर विचार करें। इस शिक्षा की कुछ सामान्य कमज़ोरियां क्या हैं?
4. पाठ में प्रकाशितवाक्य 20 के सम्बन्ध में प्रीमिलेनियलिज़्म की तीन विशेष कमज़ोरियां बताई गई हैं। पहली कमजोरी क्या है?
5. दूसरी कमज़ोरी क्या दी गई है? प्रीमिलेनियलिज़्म की मुख्य शिक्षाएं बताएं जो प्रकाशित वाक्य 20 में नहीं मिलतीं।
6. पाठ में दी गई प्रीमिलेनियलिज़्म की तीसरी कमजोरी क्या है? जब प्रतीकात्मक पदों पर आधारित थ्योरियां वचन की स्पष्ट शिक्षा के विपरीत हों तो हमें किसे मानना

चाहिए।

7. क्या नया नियम सिखाता है कि मसीह अब राज कर रहा है?
8. क्या नया नियम सिखाता है कि मसीह का राज्य इस समय है?
9. क्या नया नियम सिखाता है कि कई शारीरिक पुनरुत्थान होंगे?
10. प्रकाशितवाक्य 20:4-6 सिखाता है कि शहीद (और अन्य मरे हुए विश्वासी) जीएंगे, राज करेंगे, न्याय करेंगे और याजकों के रूप में सेवा करेंगे। क्या ये प्रतिज्ञाएं केवल शहीदों के लिए हैं या वे हर मसीही पर लागू होती हैं? तो फिर क्यों यह जोर दिया जाता है कि शहीदों को ये आशिषें मिली थीं?
11. ''पहला पुनरुत्थान'' वाक्यांश के अर्थ और महत्व पर चर्चा करें।
12. मसीही लोगों को किस विशेष अर्थ में *जीवन* मिला है, जो संसार को नहीं मिला? किस सामान्य अर्थ में मसीही लोग राज करते हैं? किस सामान्य अर्थ में मसीही लोग संसार का न्याय करते हैं?
13. किस तरह 20:4-6 से आपके मन को शांति मिलनी चाहिए?